B.A.I (Hons) God

Q: Compare Sankara and Ramanuja of God.

Ans: ईश्वर के स्वरूप की समस्या धर्म और दर्शन दोनों के लिए है। इनदोनों क्षेत्रों में ईश्वर के संबंध में विभिन्न प्रकार के विचार दिये गये हैं। अब हम दर्शन के क्षेत्र में ईश्वर के स्वरूप के संबंध में विचारों का अवलोकन करते हैं। हम पाते हैं कि यहाँ ईश्वर को बौद्धिक ज्ञान के माध्यम से स्वीकार किया गया है। धर्म में ऐसी बात नहीं है वहाँ ईश्वर की अनुभूति के आधार पर स्वीकार किया जाता है। जहाँ दर्शन ईश्वर के स्वरूप को बौद्धिक आधार पर जानने का प्रयास करता है वहाँ धर्म उसके अस्तित्व को और दर्शन को Immediate experience के आधार पर जानने का प्रयास करता है। भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन में ईश्वर के संबंध में विभिन्न सिद्धान्तों का उल्लेख किया जाता है। जैसे Pantheism Panentheism Deism और Theism सभी दार्शनिक अपने ईश्वरवादी विचार में इन उपर्युक्त सिद्धान्तों में से किसी एक को किसी न किसी रूप में मानते हैं।

भारतीय दर्शन में वेदान्त दर्शन के दो प्रमुख स्तंभ 'शंकर' और 'रामानुज' के ईश्वरवादी विचार कुछ अंशों में समान हैं। परन्तु आंशिक समानता के बावजूद दोनों के विचारों में काफी अन्तर है। इनदोनों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए सर्वप्रथम हमें दोनों के विचारों का अलग-अलग उल्लेख करना होगा।

सर्वप्रथम जब हम शंकर के ईश्वरवादी विचार की ओर मुड़ते हैं तो पाते हैं कि वहाँ ईश्वर एक वास्तविकपूर्ण सत्ता है। वैसे हम जानते हैं कि शंकर के अनुसार परमसत्ता ब्रह्म है। जब हम ब्रह्म को ज्ञान के माध्यम से जानने का प्रयास करते हैं तो वही ब्रह्म ईश्वर का रूप ले लेता है। दूसरे शब्दों में हम यों कह सकते हैं कि जब हम ब्रह्म को गुणयुक्त कर देते हैं तो वह ईश्वर बन जाता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि ईश्वर सगुण ब्रह्म है। ईश्वर के स्वरूप के बारे में शंकर का कहना है कि ब्रह्म एक है। ब्रह्म विश्व का स्रष्टा, पालनकर्ता एवं संहारकर्ता है। शंकर का कहना है कि ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, अंतर्यामी एवं स्वयंभू है। ईश्वर के बारे में विशेष रूप से व्याख्या करते हुए शंकर ने कहा है कि ईश्वर कुछ नहीं मात्र ब्रह्म का प्रतिबिम्ब है।

अब प्रश्न उठता है कि शंकर के अनुसार ईश्वर और विश्व में क्या संबंध है? शंकर ने ईश्वर

Scanned with CamScanner

को विश्व का सृष्टिकर्ता माना है। लेकिन प्रश्न उठता है कि आखिर किस प्रयोजन से ईश्वर विश्व की सृष्टि करता है। अगर थोड़ी देर के लिए यह मान लिया जाये कि ईश्वर किसी प्रयोजन से विश्व की सृष्टि करता है तो वैसी स्थिति में ईश्वर की पूर्णता खण्डित हो जाती है। शंकर का कहना है कि जिसतरह से मनुष्य के अन्दर स्वाभाविक रूप से कोई क्रिया होती रहती है उसीतरह से सृष्टि करना ईश्वर की एक स्वाभाविक क्रिया है। शंकर ने ईश्वर को उपादान एवं निमित्त दोनों कारण माना है। उपादान-कारण मानने में हमें कोई आपत्ति नहीं होती। परन्तु निमित्त-कारण एक आपत्ति है। हम जानते हैं कि निमित्त-कारण एक सक्रिय अभिकर्ता (Active Agent) ही हो सकता है। परन्तु शंकर की यह मान्यता है कि ईश्वर अपने-आप में निष्क्रिय है। यदि ईश्वर अपने आप में निष्क्रिय है तो वह निमित्त-कारण कैसे हो सकता है? शंकर का कहना है कि यह बात ठीक है कि ईश्वर निष्क्रिय है परन्तु माया के कारण वह सक्रिय हो जाता है। अतः ईश्वर को निमित्त-कारण मानना युक्ति संगत नहीं है।

शंकर का ईश्वर संबंधी विचार ~~ब्रेडले~~ पाश्चात्य दार्शनिक ब्रेडले के ईश्वर संबंधी विचार से मिलता है। जैसा कि हम जानते हैं कि ब्रेडले ईश्वर को ब्रह्म का विवर्त माना है। उनके अनुसार, Ultimate reality Absolute है और ईश्वर सभी absolute का appearance है। शंकर भी ब्रेडले के विचार से सहमत है। शंकर का भी कहना है कि इस विश्व का परम-सत्ता ब्रह्म है और ईश्वर इसका विवर्तमात्र है। शंकर ने ईश्वर को विश्वव्यापी तथा विश्वातीत दोनों माना है। जिसप्रकार से कोई कलाकार अपने कलाकृति से अलग होते हुए भी उसमें वर्तमान रहता है। ठीक उसीप्रकार ईश्वर विश्व में व्याप्त है और विश्व से परे भी।

शंकर ने ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करते हुए परम्परागत सभी सिद्धान्तों का खण्डन किया है। उनका कहना है कि तार्किक युक्ति हमें मात्र ईश्वर के विचार को देता है न कि ईश्वर की सत्ता को देता है। विश्व संबंधी युक्ति से ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करना एक दोषपूर्ण प्रयास है। विश्व एक सशीम कार्य है तो हम ईश्वर जो असीम है उसे विश्व के कारण के रूप में कैसे स्वीकार कर सकते हैं? प्रयोजनात्मक युक्ति से मात्र इतना ही सिद्ध

होता है कि इस विश्व के विविधता के बीच एक चेतन सत्ता है। लेकिन हम यह कैसे कह सकते हैं कि वह चेतन सत्ता ईश्वर ही है। इसप्रकार शंकर ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए दिये गये सभी युक्तियों का खण्डन किया है। लेकिन यह समस्या बनी ही रहती है कि शंकर ईश्वर की सत्ता को कैसे प्रमाणित करते हैं? शंकर का कहना है कि ईश्वर की सत्ता को तर्क के आधार पर नहीं प्रमाणित किया जा सकता है बल्कि यह तो एक विश्वास का विषय है। शंकर का कहना है कि ईश्वर की सत्ता को श्रुति द्वारा प्रमाणित कर सकते हैं। उनका कहना है कि श्रुति में ईश्वर की चर्चा है। अतः ईश्वर का अस्तित्व है। शंकर का ईश्वर संबंधी यह दृष्टिकोण। काण्ट के ईश्वर संबंधी विचारों से मिलता-जुलता है। काण्ट ने भी ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए दिए गए सभी सिद्धान्त का खण्डन किया है। काण्ट का भी कहना है कि ईश्वर का अस्तित्व तर्क के आधार पर नहीं प्रमाणित किया जा सकता बल्कि यह तो एक विश्वास का विषय है। इस संबंध में Dr. C. D. Sharma का कहना है कि "As Kant fallsback on faith so Sankara falls back on Shruti"

शंकर के ईश्वरवादी विचार को हम तकनीकी भाषा में हम कह सकते हैं कि यह एक Panentheism का सिद्धान्त है क्योंकि इस सिद्धान्त के अनुसार विश्व ही ईश्वर है और ईश्वर ही विश्व है। शंकर की भी यह मान्यता है कि यह विश्व और ईश्वर दोनों दो नहीं बल्कि विश्व ईश्वर की अभिव्यक्ति है।

शंकर के ईश्वर-विचार के बाद जब हम रामानुज के ईश्वर विचार का अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि ईश्वर ब्रह्म का ही दूसरा नाम है। रामानुज ने जगत् के परम सत्ता के रूप में ब्रह्म को स्वीकार किया है। उन्होंने ब्रह्म के तीन अंगों का वर्णन किया है। ईश्वर, जड़, जगत् और आत्मा। इन तीनों में सबसे सत्य आत्मा को माना गया है। हम यह भी कह सकते हैं कि रामानुज ने ब्रह्म और ईश्वर में कोई भेद नहीं किया है। ईश्वर की विशेषता बतलाते हुए उन्होंने कहा है कि वह एक पूर्ण सत्ता है। वह अंतर्यामी है। वह जीवों को शुभ-अशुभ का फल प्रदान करता है। अतः हम कह सकते हैं कि वह कर्मफल-दाता है। वह विश्व का स्रष्टा, पालनकर्ता तथा संहारकर्ता है।

Scanned with CamScanner

विश्व और ईश्वर के संबंध को स्पष्ट करते हुए रामानुज ने बताया है कि वह विश्व का निर्माणकर्ता है इसलिए वह निमित्त कारण है और पुनः वह अपने अन्दर निहित अचित् से विश्व का निर्माण करती है। अतः वह उपादान-कारण है। अतः वह उपादान कारण तथा निमित्त कारण दोनों है। रामानुज सत्कार्यवाद को मानते हैं। वे सत्कार्यवाद के पहले रूप भेद परिणामवाद को मानते हैं। समस्त विश्व ईश्वर के पहले से ही वर्तमान रहता है। इसलिए जगत् उतना ही सत्य है जितना ईश्वर।

रामानुज के अनुसार ईश्वर उपासना का विषय है। वह भक्तों के प्रति दयावान है। वह अनेक गुणों से पूर्ण युक्त है। लेकिन वह अपने को भिन्न रूपों में व्यक्त करता है। रामानुज ने ईश्वर की अभिव्यक्ति को पाँच रूपों में व्यक्त किया है—

1. अंतर्यामी— यह ईश्वर का प्रथम रूप है। यह सभी जीवों के अन्तःकरण में प्रवेश कर उनकी सभी प्रवृत्तियों को गति प्रदान करता है।
2. (पर ब्रह्म वासुदेव) नारायण:→ यह ईश्वर का दूसरा रूप है। यह एक सगुण और व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर की कल्पना है। इसी रूप को बैकुण्ठ से देवता लोग देखते हैं।
3. व्यूह → यह ईश्वर का तीसरा रूप है। इस रूप में ईश्वर सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता के रूप में उपस्थित होता है।
4. अवतार— यह ईश्वर का चौथा रूप है। ईश्वर कभी-कभी मनुष्य और पशु के रूप में प्रकट होता है। इस रूप को ईश्वर का अवतार कहा जाता है।
5. अर्चावतार → ईश्वर भक्तों के भक्ति के वशीभूत होकर कभी-कभी मूर्तियों में प्रकट होता है। यह ईश्वर के अवतार का विशेष रूप है जिसके फलस्वरूप इसे अर्चावतार कहा जाता है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि रामानुज अपने ईश्वरवादी विचार में Theism Theory को मानते हैं। यह एक व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर का सिद्धान्त है जिसमें सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता के रूप में स्वीकार किया जाता है। रामानुज भी एक व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर की कल्पना करते हैं जो हमारे लिए उपासना का विषय है और जगत् का स्रष्टा भी है। रामानुज के अनुसार ब्रह्म और ईश्वर में कोई भेद नहीं है। इन्होंने ईश्वर

Scanned with CamScanner

को ब्रह्म का दूसरा रूप माना है।

जब हम शंकर और रामानुज के ईश्वरवादी विचार का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि इनके विचारों में आंशिक समानता भी है। रामानुज और शंकर दोनों ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण मानते हैं। ये दोनों मानते हैं कि विश्व का Creating principle ईश्वर ही है। जहाँ तक ईश्वर के गुण की बात है ये दोनों दार्शनिक समान गुणों का आरोपण करते हैं। इनदोनों का मत है कि ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, विश्व का स्रष्टा है।

जब हम ईश्वर और विश्व के संबंध के बारे में इनदोनों दार्शनिकों के विचारों को देखते हैं तो पाते हैं कि इस संदर्भ में दोनों के विचार बिल्कुल समान है। इन दोनों दार्शनिकों ने यह स्वीकार किया है कि ईश्वर विश्व का निमित्त-कारण एवं उपादान-कारण दोनों है। शंकर और रामानुज दोनों मानते हैं कि यह विश्व ईश्वर की अभिव्यक्ति है।

उपर्युक्त आंशिक समानता के बावजूद यह कहना उचित होगा कि ईश्वर संबंधी विचार में ये दोनों दार्शनिक भिन्न है। सर्वप्रथम हम देखते हैं कि जहाँ शंकर यह स्वीकार करते हैं कि ईश्वर ब्रह्म का विवर्त रूप है वहाँ रामानुज इस विचार से सहमत नहीं है। उनका कहना है कि ईश्वर ब्रह्म का ही दूसरा रूप है। दूसरी बात यह है कि शंकर के अनुसार ईश्वर माया की सृष्टि है अर्थात ईश्वर एक भ्रममूलक सत्ता बन जाता है। लेकिन रामानुज के अनुसार ईश्वर एक भ्रममूलक नहीं बल्कि वास्तविक सत्ता है।

शंकर सत्कार्यवाद का दूसरा रूप विवर्तवाद को मानते हैं। उनका कहना है कि यह विश्व असत्य है क्योंकि ईश्वर ने इसे माया के सहायता से बनाया है। लेकिन रामानुज परिणामवाद को मानते हैं। इसलिए उनका विचार है कि विश्व ईश्वर का वास्तविक रूप है। अतः ईश्वर और विश्व में अविभाज्य संबंध है। रामानुज का यह कहना है कि विश्व की सृष्टि करना ईश्वर का एक स्वाभाविक गुण है जबकि शंकर का कहना है कि यह सृष्टि मात्र ईश्वर का खेल है। इसतरह, हम कह सकते हैं कि शंकर तथा रामानुज के ईश्वर विचार में स्पष्ट

दोनों दार्शनिकों के ईश्वर संबंधी विचारों की समीक्षा करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि रामानुज का ईश्वरवादी विचार शंकर से ज्यादा सुदृढ़ एवं तार्किक है। शंकर का ईश्वर मात्र भ्रममूलक सत्ता है। ~~जबकि~~ शंकर का ईश्वर हमारी उपासना का विषय नहीं है बन सकता क्योंकि वह वास्तविक नहीं है। लेकिन रामानुज का ईश्वर वास्तविक सत्ता होने के कारण हमारी उपासना का विषय बन सकता है। अन्त में हम कह सकते हैं कि जहाँ शंकर का ईश्वर धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से अयुक्तिसंगत है वहाँ रामानुज का ईश्वर धार्मिक एवं दार्शनिक दोनों दृष्टिकोण से उचित है।

Scanned with CamScanner